हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास

सय्यद ताहेर

पी.एचडी.शोधार्थी

तेलंगाना विश्वविद्यालय,दिचपल्ली,जिला निज़ामाबाद

Email: Syedtaher11@gmail.com

+919391764590

- प्रस्तावना:

  उपन्य्यास साहित्य की विशिष्ट विधा है.गद्य साहित्य में उपन्यास ही सबसे अधिक चित्ताकर्षक व मनोरंजक विधा है.इनकी लोकप्रियता साहित्य जगत का सबसे बड़ा तथ्य है.साहित्य 'जीवन का प्रतिबिम्ब है.'

  'साहित्य समाज का दर्पण है.'इस कथन की अनुभूति हमको उपन्यास के द्वारा ही होती है.उपन्यास में जिए जाने वाले जीवान की कथा होती है.तथा उस जीवान को जीनेवाले पात्रों का वर्णन होता है.

- परिभाषा:

  उपन्यास गद्य में होता है.साहित्यिक दर्पणकार विश्वनाथ ने छन्द के बन्धन से मुक्त रचना को गद्य कहा है.दणडी ने चरण रहित पद समूह को गद्य कहा है.इसी के दो मुख्य भेद माने गये हैं :१)आख्यायिका २)कथा

  आख्यायिका एतिहासिक या लोक प्रसिद्ध पात्रौं के सम्बन्ध में होती है जबकि कथा काल्पनिक होती है."हर्ष चरित"आख्यायिका है और "कादम्बरी"कथा.डॉ.हजारी प्रसाद द्वेदी ने ठीक ही कहा है कि- "काव्य आख्यायिका से उपन्यास और उपन्य्यास से बोलती तस्वीरौं तक का इतिहास बहुत ही दिलचस्प और आकर्षक है."

उपन्यास शब्द उप+नि +अस से बना है,जिसका अर्थ है पास मिलाकर युक्ति युक्त अर्थ में रखना या उप्स्थापना करना.वस्तुत:उपन्यास वह रचना है ,जिसमे जीवन के अनेक पक्षों का प्रक्षेपण निकट या समीप से किया गया हो

उपन्यास की परिभाषा देते हुए मुंशी प्रेमचंद कहते हैं-"मैं उपन्यस को मानव-जीवन का चित्र-मात्र समझता हु.मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्ययूओ को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है."इस परिभाषा में हम देखते हैं कि मानव-जीवन मानव-चरित्र को ही उपन्यास का केंद्र और मूलाधार माना गया है.बाबू श्याम सुन्दरदास ने उपन्यास की परिभाषा देते हुऐ बड़ी मार्के की बात कही है.उनके अनुसार "उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है."उन्होंने उपन्यास की एक और बड़ी वैज्ञानिक विशलेष्णात्मक परिभाषा देते हुए कहा है:"कार्य-कारण श्रून्कला में बंधा हुआ वह गद्य-कथानक है,जिनसे अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियौ से सम्बन्धित वास्तविक-काल्पनिक घटनाऔ द्वारा मानव-जीवन के सत्य का रसात्मक ढ़ंग से उदघाटन किया जाता है.

"उपन्यास"वर्तमान काल के गद्य की सबसे सशक्त एवं प्राणवान विधा है. वह आधुनिक सभ्यता की दे है.

निष्कर्ष में यह कह सकते हैं कि "उपन्यास "व्यापक धरातल पर जीवन की व्याख्या करने वाला सबसे समर्थ माध्यम है.जीवन का यथार्थ चित्र होने के कारण उपन्यास सभी परिवर्तननो से पूर्ण प्रभावित होता है,जो युग और जीवन को प्रभावित करते हैं.

हिन्दी उपन्यास का विकास:

आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्त्वपूर्ण स्थान है.हिन्दी उपन्यास के विकास का श्रेय अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासौं को दिया जा सकता है,क्योँकि हिन्दी में इस विधा का श्रीगणेश अंग्रेजी एवं उपन्यासौं की लोकप्रियता से हुआ.

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवैदी ने'सरस्वती'में प्रकाशित एक निबंध 'उपन्यास-रहस्य'में इस बात को स्वीकार किया गया है.

बालकृष्ण भट्ट ने भी इसकी पृष्टि करते हुए लिखा-"हम लोग जैसा और बातों में अन्ग्रेजौं की नक़ल करते जाते है,उपन्यास का लिखना भी उन्ही के दृष्टांत पर सीख रखे हैं.

हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास के सम्बन्ध में विध्वानों में मतभेद रहा है.इस सम्बन्ध में जिन दो उपन्यासौं का नाम लिया जाता है वै हैं-श्रद्धाराम फुल्लौरी कृत 'भाग्यवती'सन१८७७ ई.तथा लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखा गया 'परीक्षा गुरु'सन्१८२२ई.इनमे से प्रथम उपन्यास में सुधारवादी प्रवृति परिलक्षित होती है तथा द्वीतीय उपन्यास में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को श्रेष्ठ प्रमाणित करते हुए उपदेश वृत्ति का आधार ग्रहण किया गया है. 'परीक्षा गुरु'को ही अधिकाँश विद्वान हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं.

हिन्दी उपन्यास के विकासक्रम का अध्ययन करने के लिए हम उसे तीन चरणओ में विभक्त कर सकते हैं.यदि 'प्रेमचंद'को हिन्दी उपन्यास्करो में केंद्रबिंदु मान ले तो ये तीन चरण निम्नवत हैं.

१.प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास
२.प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास
३.प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास

१.प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास:

यह हिन्दी उपन्यास का प्रारंभिक चरण या अत:अभी तक उपन्यास विधा अपना स्वरुप ग्रहण करने का प्रयास कर रही थी.इस काल में लिखे गए उपन्यास प्रधानत:सुधारवादी एवं उपदेशवादी प्रकृति से परिचालित थे और उनका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन ही माना जा सकता है.इस काल में सामाजिक,एतिहासिक ,तिलस्मी ऐयारी,जासूसी,भाव प्रधान उपन्यासौं की रचना अधिक हुई है.जिनका जन-जीवन से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही दिखाई पड़ता.इस काल का प्रमुख उपन्यासकार पंडित बालकृष्ण भट्ट को माना जा सकता है.इनके लिखे तीन उपन्यास 'रहस्यकथा'(१८९२ ई.), 'नूतन ब्रहमाचारी'(१८८६ ई.)तथा 'एक अज़ान सौ सुजान'(१८९२ ई.)उल्लेखनीय है.इनके उपन्यासौं का मूल स्वर सुधारवादी एवं उपदेशमूलक है.

प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यसकारौं में जिस उपन्यासकार का नाम सर्वाधिक् आदर से लिया जाता है-वे हैं बाबू देवकीनंदन खत्री इन्होने तिलास्मी एवं ऐयारी उपन्यासौं की रचना करके पाठको का प्रयास मनोरंजन किया.इनके लिखे प्रसिद्ध उपन्यास हैं-'चन्द्रकान्ता'(१८९१ ई.),चंद्रकांता संतति,काजर की कोठरी ,भूतनाथ,कुसुम कुमारी,नरेन्द्र मोहिनी,वीरेंद्र वीर आदि.

इस काल के कुछ उपन्यासकार हैं-अयोध्या सिंह उपाध्याय(ठेठ हिन्दी का ठाठ १८९९ ई.),अधखिला फूल १९०७ ई.,लज्जाराम शर्मा(आदर्श दम्पति,आदर्श हिन्दू बिगडे का सुधार),मन्नन द्विवेदी(रामालाल),तथा राधिकार मण प्रसाद सिंह(प्रेमलहरी)आदि.

इस काल में हिन्दीउपन्यास ने अपना मार्ग तलाश किया.अब वह एक राजमार्ग पर पहुँच चुका था जहां से आगे का रास्ता सीधा एवं सपाट था.इस काल के उपन्यास प्रधानत:सुधारवादी एवं उपदेशात्मक वृत्ति को लेकार लिखे गए मूल उद्देश्यमनोरंजक करना था.

२.प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास:

प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यासकरौं में प्रेमचंद अपनी महान प्रतिभा के कारण युग प्रवर्तक के रूप में माने जाते हैं.वस्तुत:सही अर्थौं में उन्हौंने ही हिन्दी उपन्यास शिल्प का विकास किया.उनके उपन्यासौं मे पहली बार सामान्य जनता को सम्स्याओं की कलात्मक अभिव्यक्ति की गयी थी और जन जीवन का प्रमाणिक एवं वास्तविक चित्र पाठकों को देखना सुलभ हुआ था.अपने महान उपन्यासौं के कारण वे वास्तव में 'उपन्यास सम्राट'का पद पाने के अधिकारी सिद्ध हुए.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवैदी ने प्रेमचंद का मूल्याकन करते हुए लिखा है-"प्रेमचंद शाताब्दियों से पददलित,अपमानित और उपेक्षित कृषकौ की आवाज़ थी.अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार,भाषा-भाव,रहन-सहन,आशा-आकांशा,सुख -दुःख और सूझ-बुझ जानना चाहते हैं,तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता.

प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासका रौं में जयशंकर प्रसाद,विश्वनाथ शर्मा 'कौशिक',आचार्य चतुरसेन शास्त्री,प्रतापनारायण श्रीवास्तव,पांडे बेचन शर्मा 'उग्र'वृन्दावन लाल वर्मा,भगवतीप्रसास,वाजपेयी,जी.पी.श्रीनिवास आदि प्रमुख हैं.

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास:

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास का फलक बहुत ही विस्तृत है.इसमें प्रेमचंद के निधन के बाद से अब तक के उपन्यास सम्मिलित हैं.इस काल में उपन्यास का विकास बहुआयामी हो जाता है.हिन्दी उपन्यास में कई विचारधाराए आ जाती है और उन पर उपन्यास लिखने का चलन प्रारम्भ हो जाता है.मार्क्सवादी विचारधारा हिन्दी उपन्यास को गहरे स्तर तक प्रभावित करती है.मनोविश्लेषणवादी विचारधारा व अस्तित्ववाद से भी हिन्दी उपन्यास अछूते नहीं रह पाते.भारत की आज़ादी इस युग का एक निर्णयक मोड़ है.प्रेमचंदोत्तर उपन्यास के विकास को निम्न रूपौ में देखा जा सकता है.

१.प्रकृतवादी उपन्यास
२.मनोविश्लेषणवादी उपन्यास
३.ऐतिहासिक उपन्यास
४.सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास
५.प्रगतिवादी उपन्यास
६.आंचलिक उपन्यास
७.अल्पसंख्यक विमर्श
८ स्त्री विमर्श

९.आदिवासी विमर्श
१०.दलित विमर्श

- <u>स्त्री विमर्श</u>

भारत की आज़ादी के बाद हिन्दी उपन्यास का स्वरूप ही बदल गया.स्त्री विमर्श को केंद्र में रखकर स्त्री लेखिका की एक सशक्त पीडी सामने आयी.स्त्रियाँ लैंगिक असमानता व लैंगिक अन्याय के विरूध्द उठ ख ड़ी हुई.ये लेखिकाएं अपनी विशिष्ट रचना संसार से हिन्दी उपन्यास को नयी पहचान देती है.इस दौर में कृष्णा सोबती के सूरजमुखी अँधेरे के,उषा प्रियंवदा के 'पचपन खम्बे लाल दिवारें'चित्रा मुद्गल के 'एक ज़मीन अपनी',प्रभा खेतान के 'आओ पेपे घर चलें',मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' 'इदन्नम्म', 'अल्मा कबूतरी' आदि उल्लेखनीय उपन्यास है.

- <u>अल्पसंख्यक विमर्श:</u>

हिन्दी साहित्य में अल्पसंख्यक विमर्श के जोर जकड़ने से हिन्दी में अल्पसंख्यक उपन्यास की कार्यवाही जोरे जोर से चल रहा है.प्रेमचंद,अमृतलाल नगर,राही मासूम रज़ा ने 'टोपी शुक्ला', 'हिम्मत जौनपुरी'उपन्यासौं में सांप्रदायिक ज़हर के फैलाने के मुद्दौं के साथ-साथ अछूत वर्ग को भी अपने उपन्यासौं में दर्शाया है.मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपने उपन्यासों में मध्य प्रदेश बस्तर क्षेत्र के मुस्लिम और ईसाई समुदाय का अवलोकन किया है.अल्पसंख्यक उपन्यसों में जोतश जोशी का 'सोन बरसा'(२०००),नासिरा शर्मा का 'अक्षयवट', 'जिंदा मुहावरे'(२००३),भीष्म साहनी का 'नीलू,नीलिमा,नीलोफर'(२०००)उल्लेखनीय है.

- <u>निष्कर्ष:</u>

हिन्दी उपन्यास का जन्म भारतेंदु युग में होता है.तब से लेकर आज तक हिन्दी उपन्यास विकास के नये आयामों क छू रहा है.हिंदी उपन्यास के प्रारंभिक दौर में उपदेशात्मकता की भरमार रही.प्रेमचंद के आते ही हिन्दी उपन्यास प्रौढ हो जाता है.वे उसे समाज के यथार्थ से जोड़ देते हैं.उनके बाद हिन्दी उपन्यास बहुआयामी हो जाता है.प्रगातिवादी उपन्यासकार अपने उपन्यसों में मार्क्सवादी मूल्यौं को स्थापित किया.इस प्रकार हिन्दी उपन्यास ने विकास का एक लम्बा सफ़र तय किया है.हिन्दी उपन्यास विषयों की विविधता के स्तर पर भी क्रमश:समृध्द होती गई और शिल्प के स्तर पर हिन्दी उपन्यासों में विवधता आई है.

<u>संदर्भ ग्रंथ सूचि</u>

<u>क्रमांक</u>	<u>पुस्तक का नाम</u>	<u>प्रकाशक /लेखक</u>
१.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	डॉ.नगेन्द्र ,डॉ.हरदयाल
२.	हिन्दी उपन्यास का इतिहास	डॉ गोपाल राय
३.	हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन	डॉ.गणेशण
४.	हिन्दी उपन्यास	डॉ. सुरेश सिन्हा
५.	हिन्दी उपन्यास उपलब्धिया	लक्ष्मी सागर
६.	साहित्य और आलोचना	डॉ.बी .आर .आंबेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय,हैदराबाद